# चौधरी चरण सिंह अभिलेखागार

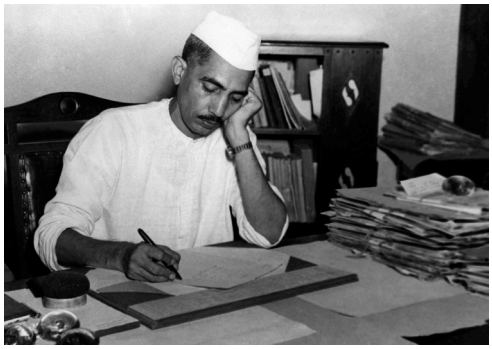

''राजनीतिक संघर्ष का एकमात्र उद्देश्य श्रमिकों की मुक्ति है..... जो लोग खेत जोतते हैं वे उसके पहले मालिक होंगे, जो लोग अनाज पैदा करते हैं उस पर उनका पहला हक होगा, जो लोग भवनों का निर्माण करते हैं वे उनमें रहेंगे.....'' *जॉर्ज जुलिआन हार्ने। जॉन स्ट्राची की पुस्तक 'द थ्योरी एंड प्रेक्टिस ऑफ सोशलिज्म' 1936 का अंश।*

चौधरी चरण सिंह के हस्तलेख में उनकी बरेली सेन्ट्रल प्रिज़न नोटबुक, 1942 से उद्घृत।

चौधरी चरण सिंह स्वातंत्र्योत्तर भारत के असाधारण बुद्धिजीवी राजनेता थे। वे ग्रामीण भारत के पक्ष में आवाज बुलन्द करने वाले सबसे सशक्त नेता थे। भारत के सामाजिक–आर्थिक विकास के वांछित आधार के रूप में छोटे और स्वावलंबी किसानों के हितों, कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रति उनकी भावपूर्ण और जीवनपर्यन्त प्रतिबद्धता रही। पचास के दशक की नेहरूवादी सोवियत शैली की सोच या समसामयिक नव उदारवादी सोच के विपरीत चरण सिंह विकास के अल्पकालिक किंतु कृषि आधारित वैकल्पिक विकास मॉडल के मुख्य निर्माता थे जिसमें उन्होंने छोटे किसानों को राज्य द्वारा उपलब्ध कराई गई आधारभूत सुविधाओं और अनेक अन्य सेवाओं की सहायता से आत्मनिर्भर बनाए जाने तथा भूमिहीनों और गैर–कृषि रोजगार में जाने वाले लोगों के लिए रोजगार सृजन हेतु लघु उद्योग लगाए जाने तथा बड़े उद्योगों की तुलना में कृषि विकास को प्राथमिकता देने, कृषि में आय बढ़ाकर मांग में वृद्धि करने तथा शहरी क्षेत्रों से अधिक ग्रामीण क्षेत्रों को प्राथमिकता देने पर बल दिया। उन्होंने 1970 के दशक के वैश्विक ग्रामीण–शहरी विमर्श को दशकों पहले शुरू कर दिया था जिसे आज फिर से शुरू किए जाने की आवश्यकता है।

अपने ग्रामीण लालन–पालन तथा अपने जीवन के आरंभिक वर्षों (1910–1930) के दौरान उभरते आर्य समाज के गहन प्रभाव तथा बाद में गांधी जी की सोच और सामाजिक–राजनीतिक बदलाव के ग्राम केन्द्रित संदेश के चिरस्थायी प्रभाव, व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा, चरित्र तथा परम्परागत मूल्यों के प्रति सच्ची वचनबद्धता और आधुनिक राजनीतिक–आर्थिक विचारों और भारत के गांवों की दशा के प्रति जीवनपर्यन्त बौद्धिक लगाव के चलते उनका व्यक्तित्व बहुमुखी बना। उन्होंने गहन शोध के आधार पर कई पुस्तकें और लेख लिखे तथा उनके अनेक राजनीतिक घोषणा–पत्र तथा भाषण इसी शोध पर आधारित रहे। मूलतः हिन्दी में सोचकर वे अंग्रेजी में आसानी से लेखन कार्य करते थे।

1950–1960 के दशकों में उनकी बढ़ती राजनीतिक कुशलता, ग्रामीण मध्यम जातियों में उनकी लोकप्रियता तथा प्रशासनिक क्षमता, उत्तर प्रदेश के समाज और राजनीति में उच्च जातियों के वर्चस्व

की अभेद्य दीवार के विरुद्ध खड़े होने से राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने की उनकी तलाश विवादस्पद बनी। अपने राजनीतिक उद्देश्यों के अनुसरण में जाति और शहरी पूंजी की इन शक्तियों पर जीत प्राप्त करने के लिए उन्होंने सोशलिस्ट, स्वतंत्र पार्टी, जनसंघ और अपनी प्रबल प्रतिद्वंदी इंदिरा गांधी की कांग्रेस जैसे राजनीतिक दलों के साथ गठजोड़ किया। अन्य नेताओं के विपरीत, वे राजनीतिक सत्ता व्यक्तिगत सम्पत्ति जुटाने या परिवार के नाम को आगे बढ़ाने के लिए नहीं अपितु 1936 से 1977 तक उत्तर प्रदेश की राजनीतिक अर्थव्यवस्था के लिए और फिर 1977 से 1987 के दशक में भारत के बृहद चित्रपट पर अपनी योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए प्राप्त करना चाहते थे।

चौधरी चरण सिंह औसत कद–काठी के व्यक्ति थे। उनका व्यक्तिगत आचरण गंगा–जमुनी तहज़ीब की शिष्टता के सभ्यतम परम्पराओं के अनुरूप था। उनका नर्म व्यवहार और अपना ही उपहास करने की आदत उनकी सार्वजनिक छवि के विपरीत थे, उनका व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन एक जैसा और पारदर्शी था तथा उनकी वैदिक हिन्दू धर्म में गहन आस्था उनके बेटी–बेटियों की अलग जाति या धर्म के लोगों के साथ विवाह करने के मार्ग में कभी आड़े नहीं आई। उनकी भौतिक इच्छाएं सीमित थी और उनका पहनावा और जीवनशैली पूर्णतः गांधीवादी थे।

उनके अनेक आलोचक उनकी राजनीतिक 'सत्तालोलुपता' को उनकी सबसे बड़ी कमजोरी कहते हैं जिसके कारण उन्होंने अपने राजनीतिक गठबंधनों में विरोधाभासों की ओर से आंखें मूंदे रखी। अनेक आलोचक उनके जमींदार मध्य जातियों के राजनीतिक आधार की शोषणकारी प्रवृत्ति का भी उल्लेख करते है, जिनका गरीब और सामाजिक रूप से बहिष्कृत दलितों के साथ निरन्तर टकराव रहा। इसके अलावा वे निजी पूंजी, बड़े उद्योग तथा शहरी कार्यों की प्रतिनिधि आधुनिकता के उनके विरोध की भी आलोचना करते हैं।

## उद्देश्य

चौधरी चरण सिंह को गुजरे 27 वर्ष हो चुके हैं। सम्भवतः यह सही ऐतिहासिक मौका और उचित समय है जब भारतीय राजनीति विशेष रूप से उत्तर भारत की राजनीति और शहरी–ग्रामीण विकास के विमर्श में उनके योगदान के विद्वतापूर्ण मूल्यांकन हेतु एक छात्रवृत्ति सृजित की जाए। कृषक समाज के इस चेतनाशील राजनेता के अभिलेखागार का निर्माण, उनके जीवन जो किसी भी तरह की विचारधारा का अंधानुकरण नहीं करता है, के प्रति एक सहानुभूतिपूर्ण और बौद्धिक रूप से ईमानदार प्रयास होगा। इस समय हमारे मस्तिष्क में निम्न प्रश्न कौंधते हैंः–

– उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि क्या थी, उनकी राजनीति पर किन–किन बातों का प्रभाव पड़ा, उनका व्यक्तित्व व चरित्र कैसा था और उनका वैश्विक दृष्टिकोण क्या था? उनके जीवन के बारे में अनेक पुस्तकें उपलब्ध हैं यद्यपि अमरीकी विद्वान पाल ब्रास द्वारा वर्ष 2013 में तीन खंडों में उनकी एक समालोचनात्मक और विद्वतापूर्ण जीवनी प्रकाशित हो चुकी है। हालांकि, एक भारतीय लेखक द्वारा अतीत की घटनाओं का संज्ञान लेते हुए और उपलब्ध व्यापक जानकारी के आधार पर उनकी जीवनी लिखा जाना अभी भी वांछनीय है।

– भूमि अधिग्रहण, जाति, धर्म, भूमिहीन मजदूरों, दलितों, मुसलमानों और इस्लाम, निजी जीवन मूल्यों और चरित्र, ऑर्गेनिक कृषि, विनिर्माण, भ्रष्टाचार महिलाओं, नेहरू और भारत के बारे में उनके क्या विचार थे? उन्होंने बैंको के राष्ट्रीयकरण और प्रिवी पर्स को समाप्त किए जाने का विरोध क्यों किया? उत्तर प्रदेश में ''खेती करने वाले को भूमि'' विधान में उनका क्या योगदान था और उन्होंने ''भूमिहीनों का भूमि'' वितरित क्यों नहीं की? उनकी व्यैक्तिक निष्ठा, शुचिता और ईमानदारी के क्या दृष्टांत थे और उनसे हम क्या सीख ले सकते हैं? उनकी विरासत किसके लिए है और उसका उत्तर भारतीय राजनीति तथा आज के राजनीतिक दलों पर क्या प्रभाव पड़ा? ''चौधरी चरण सिंह की चुनिंदा कृतियां'' और ''चरण सिंह के चुनिंदा भाषण'' हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में प्रकाशित होना भी वांछनीय हैं।

– उनके पुरानी व नई कांग्रेस, राष्ट्रीय स्वयं संघ व जनसंघ, समाजवादियों, स्वतंत्र पार्टी और जनता पार्टी के बारे में क्या विचार थे? उन्होंने वर्ष 1967 में कांग्रेस क्यों छोड़ी और उनके द्वारा गठित भारतीय क्रांति दल (बी.के.डी.) और भारतीय लोकदल ने क्या हासिल किया? वे उत्तर प्रदेश के जिलों और प्रांतीय स्तर पर बटी राजनीति में कैसे आगे बढ़े और इस राजनीति ने राष्ट्रीय राजनीति फलक पर अंततः क्या रूप धारण किया? उनके राजनीतिक विरोधी और सहयोगी राजनीतिज्ञ उनकी विद्वता, सक्षमता और योग्यता के बारे में क्या सोचते हैं?

एक बार समूची जानकारी एक स्थान पर एकत्र हो जाए, चौधरी चरण सिंह से जुड़े दस्तावेजों से संयोजन हो जाएं (उनके जीवन से जुड़े लेख और पत्राचार) जो वर्ष 1992 में नेहरू मेमोरियल म्यूज़ियम एंड लाइब्रेरी, दिल्ली को भेंट कर दिए गए थे, तदनुपरान्त एक छात्रवृत्ति शुरू की जा सकती है। सामान्यतः अभिलेखागार के सकंलन की प्रक्रिया में लिखित सामग्री और वैज्ञानिक ढंग से दस्तावेज प्रबंधन के प्रति हमारी सामूहिक अरुचि के चलते अनेक कठिनाईयां हैं और उनसे जुड़ी सामग्री यहां–वहां बिखरी हुई हैं और लुप्त होने के कगार पर हैं। इसको सहेजने के लिए किसी शोध संस्थान के सहयोग की अपेक्षा है जो इस अभिलेखागार के राष्ट्रीय महत्व को समझता हो।

# चौधरी चरण सिंह अभिलेखागार

चौधरी चरण सिंह अभिलेखागार विभिन्न सामग्री जैसे (क) पुस्तकें, समाचार पत्रों में प्रकाशित लेखों, अन्य विद्वतापूर्ण आलेखों, चौधरी साहब द्वारा स्वयं लिखे गए चुनाव घोषणा–पत्रों जैसे प्राथमिक स्रोतों; (ख) अन्य लेखकों द्वारा उनके जीवन, राजनीति, प्रशासन के बारे में समाचार–पत्रों तथा विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों सहित उनके व्यक्तित्व पर लिखे गए अन्य लेखों जैसे गौण स्रोतों; (ग) उनके राजनीतिक साथियों और राजनीतिक अनुयायियों जिनमें से आज कुछ ही जीवित बचे हैं तथापि उनकी संख्या अभी भी सैकड़ों में हैं, के साथ व्यक्तिगत साक्षात्कार और अंतिम रूप से (घ) कुछ व्यक्तियों तथा सरकारी विभागों (उत्तर प्रदेश और भारत सरकार के विभागों) में उपलब्ध जैसे पत्र, फोटोग्राफ, रिकार्ड और वीडियो इत्यादि को एक जगह संकलित करने का माध्यम बनेगा।

इस अभिलेखागार सामग्री की कुछ परिचालनात्मक मुख्य विशेषताएं भी हैं। प्रथमतः, इंटरनेट के माध्यम से इस सामग्री को सभी की पहुंच में लाना, अन्य ऑनलाइन स्रोतों से जोड़ना, लेखों, पुस्तकों, शोध लेखों, वॉयस रिकार्ड और फोटोग्राफ का समसामयिक सूचना प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया के माध्यम से निःशुल्क डिजिटल वितरण। दूसरा, चौधरी चरण सिंह अभिलेखागार से जुड़ा एक समुदाय बनाना जिनके बीच ऐसे मुद्दे जो चौधरी साहब के दिल के करीब थे, के बारे में लिखा जा सके और उन पर तार्किक बहस हो सके ताकि भारत के समसामयिक सामाजिक–राजनीतिक विमर्श में लुप्त हो चुकी खेती और किसान की आवाज पुनः सुनी जा सके।

---

**हर्ष सिंह लोहित** (स्वर्गीय वेद वती और डॉ. जय पाल सिंह के सुपुत्र) चौधरी चरण सिंह के धेवते हैं तथा उन्होंने 25 वर्षों तक (वर्ष 2012 तक) सूचना प्रौद्योगिकी एवं सेवा क्षेत्र में कार्य किया है तथा वे इस क्षेत्र में सफल व्यवसायी रहे हैं (https://www.linkedin.com/in/harshlohit) । वे आर्गेनिक किसान है (https://amanbagh.wordpress.com/) और शौकिया फोटोग्राफी करते हैं। +91 9810032223 harshlohit@gmail.com